विजेता जागो-प्रार्थना विषय-जून 2024

1. सफेद वस्त्र - परमेश्वर का शुक्र है कि जब अंत होगा, तो सभी देशों के लोग और भाषाएँ स्वर्ग में सिंहासन के सामने सफ़ेद वस्त्र पहने हुए, मेम्ने के खून में धोये हुए खड़े होंगे -. (प्रका० 7:9,14)

2. कौन जाएगा - प्रभु आपको महान आज्ञा को पूरा करने के लिए, एक मसीह के अनुयायी के रूप में, भाग लेने के लिए आमंत्रित कर रहे हैं। यदि आप नहीं तो कौन? और अगर अब नहीं तो कब? उनके निमंत्रण के लिए और आपको कभी भी अकेला न छोड़ने और हमेशा साथ रहने के वादे के लिए उनको धन्यवाद दें। (मत्ती 28:20)

3. अंशदान - "मैं किसे भेजूं?" और हमारे लिए कौन जाएगा?" (यशा. 6:8) वह प्रार्थना करो हमारे परमेश्वर, जो स्वर्ग और पृथ्वी के निर्माता हैं, उनसे प्रार्थना करो कि वह आपको दिखाएं कि आप कैसे महान आज्ञा को पूरा करने में योगदान दे सकते हैं।

4. एक प्रबल इच्छा - "जो आत्मा हम में वास करता है वह ईर्ष्या से लालायित रहता है" (याकूब 4:5)। परमेश्वर सभी मनुष्यों को बचाने की प्रबल इच्छा रखता है। प्रार्थना करें कि आपके पास भी कुछ ऐसी ही इच्छा हो कि परमेश्वर अन्य लोगों को अपने समीप लाने में आपकी सहायता करे।

5. प्रलोभन - "और हमें परीक्षा में न डाल, बल्कि बुराई से बचा" (मत्ती 6:13) हम प्रलोभन पर कैसे विजय पा सकते हैं? आइए पहचानें कि हम अपनी ताकत से ऐसा कर पाने में असमर्थ हैं। परमेश्वर हमें विजय प्रदान करना चाहता है, यदि हम उससे विनती करें तो।

6. आश्वासन - "आत्मा स्वयं हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है कि हम परमेश्वर की संतान हैं" (रोम. 8:16). केवल अपनी शक्ति से परमेश्वर से प्रेम करना हमारे लिए असंभव है। लेकिन यीशु के माध्यम से हम इस घनिष्ठ रिश्ते में आये हैं। परमेश्वर का शुक्र है कि उसका प्यार अब हमारे दिलों में उतर गया है। (रोम. 5:5)

7. शत्रुओं से प्रेम - "अपने शत्रुओं से प्रेम करो और उन लोगों के लिए प्रार्थना करो जो तुम्हे सताते हैं"

(मत्ती 5:44) यह बिल्कुल वैसा ही है जैसा यीशु ने किया था। परमेश्वर का शुक्र है जो हमें पवित्र आत्मा के माध्यम से सक्षम बनाता है कि उन लोगों से प्यार करे जो हमसे नफरत करते हैं और उनकी भलाई की कामना करते हैं। यह वास्तविकता में जीत का रास्ता है

8. धन - "परमेश्वर जो हमें हमारे आनंद के लिए सब कुछ बहुतायत से प्रदान करता है...अच्छे कामों में धनी, और उदार और बांटने में तत्पर रहो होने के लिए।" (1 तीमु. 6:17-19)। जब हम परमेश्वर की आशीष का आनंद लेते हैं और उदार होते हैं, तो हमारा धन अनंत महत्व प्राप्त करता है और हमारी कृतज्ञता बढ़ती है.

9. विवाह – "इस कारण मनुष्य अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी के पास एक हो कर रहेगा और वे दोनों एक तन होगें" (मत्ती 19:5)। स्वायत्तता, जिम्मेदारी, नया मिलन - विवाह के लिए परमेश्वर की योजना के अनुसार यह अच्छा क्रम है। धन्यवाद प्रभु बाइबल में स्पष्ट निर्देशों के लिए।

10. मसीह में धन्य - प्रिय प्रभु, पहले मैंने आपसे मुझे आशीष देने के लिए प्रार्थना की है। हालाँकि, अब मुझे एहसास हुआ कि आपने स्वयं को मुझे देकर पहले ही आशीष दे दी है। सभी आशीषों का स्रोत—यीशु मसीह स्वयं, अब मुझमें निवास करता है। सभी आशीष आपसे आती हैं और मैं अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए आप पर भरोसा करता हूं। (इफि. 1:3)

11. मसीह में चुना गया - हे प्रभु, मैं कल्पना नहीं कर सकता कि आपके अलावा कोई मुझे चाहेगा! आपने अपने महान प्रेम के कारण मुझे चुना। आपने मुझे मसीह में रहने का अवसर दिया ताकि हम एक साथ रह सकें। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप मुझे पवित्र आत्मा से भर दें ताकि मैं पवित्रता में चल सकूँ. (इफि. 1:4)

12. मसीह में अपनाया गया - मुझे अपने परिवार में शामिल करने की योजना बनाने के लिए धन्यवाद, प्रभु परमेश्वर! भले ही मैं दुष्ट का भ्रष्ट बच्चा था, फिर भी आपने मुझे अपने परिवार में अपनाया। आपने मुझे क्षमा किया, मुझे छुड़ाया और पुनः स्थापित किया। आपने मुझे अपने साथ जोड़ लिया मैं परमेश्वर की संतान बन सका, इतना प्यारा स्वर्गीय पिता होने के लिए धन्यवाद! (इफि. 1:5)

13. मसीह में स्वीकृत - प्रिय परमेश्वर, अस्वीकृति वास्तव में कठिन हो सकती है, खासकर जब मैं ऐसा महसूस करूँ कि आपने मुझे अस्वीकार कर दिया है। लेकिन अब मुझे पता है कि एक बार जब मैंने मसीह को स्वीकार कर लिया, तो मैं मसीह के साथ एक कर दिया गया है। मेरे भीतर मसीह होने के कारण अब आप मुझे स्वीकार करते हैं। धन्यवाद, प्रभु यीशु मसीह, कि आपने मुझे पिता परमेश्वर के लिए स्वीकार्य बनाया है! (इफि. 1:6)

14. मसीह में क्षमा किया गया - प्रिय परमेश्वर, दूसरों को क्षमा करना कठिन है, लेकिन स्वयं को क्षमा करना और भी कठिन है। अब मुझे समझ आया कि क्यों। क्षमा एक उपहार है जो मुझे सबसे पहले आपसे प्राप्त करना चाहिए. मैं अपने पापों को स्वीकार करता हूं और आपकी क्षमा प्राप्त करता हूं। धन्यवाद मुझे माफ़ करने के लिए! मैं अब खुद को माफ कर देता हूं। मुझे उन लोगों को क्षमा करने में सक्षम करें जिन्होंने मेरे साथ अन्याय किया है। (इफि. 1:7)

15. भरोसा- भजनकार के साथ प्रार्थना करें: "हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना सुन, मेरी पुकार का उत्तर दे।" जब मेरा हृदय उदास हो जाता है, तब मैं पृथ्वी की छोर से तुझे पुकारता हूं; मुझे उस चट्टान तक ले चलो जो मुझ से भी ऊँचा है। क्योंकि तू मेरे लिये शरणस्थान, और मेरे दुश्मन के विरूद्ध सामर्थ का गढ़ है।" (भजन 61:1-3) अँधेरे में भी प्रभु पर भरोसा रखो। वह बाहर निकलने का रास्ता जानता है.

16. भारहीन - "क्योंकि परमेश्वर का प्रेम यही है, कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें।" और उसकी आज्ञाओं का पालन करना कठिन नहीं है; (1 यूहन्ना 5:3) बहुत से लोग जैसा बोलते है उसके विपरीत, प्रभु के प्रति आज्ञाकारी होना कोई बोझ नहीं है! आइए पवित्र आत्मा से हमारी यात्रा में सहायता करने के लिए कहें यह इसलिए है ताकि हम उन मनुष्यों के रूप में चल सकें जो हमारे प्रभु के सामने पवित्र हैं।

17. चिंताएं - बेरोजगारी, बीमारी, संतान और अन्य कारण एक आदमी के दिल से शांति बाहर कर सकते हैं। प्रभु, हम अपने उन भाइयों के लिए प्रार्थना करते हैं जो कठिन परिस्थितियों के माध्यम से हो कर जा रहे हैं और विनती करते हैं किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएँ। (फिलि. 4:6)

18. परख- निर्णय लेना एक ऐसी चीज़ है जो हम हर दिन करते हैं! परिवार में, कार्य क्षेत्र में, चर्च में, हम सही निर्णय लेना चाहते हैं। प्रभु और उसके मार्गदर्शन की तलाश इसे ठीक से करने की दिशा में पहला कदम है। (प्रेरितों 16:6-10) वह दरवाजे खोल सकता है लेकिन उन्हें बंद भी कर सकते हैं! पिता, हम आपकी दिशा को समझने के लिए परख माँगते हैं!

19. भरोसा - केवल इतना करो कि तुम यहोवा के विरुद्ध बलवा न करो; और न उस देश के लोगों से डरो; और यहोवा हमारे संग है; उन से न डरो।" (गिनती 14:9) जब हम हमारी दुनिया के अंदर की उथल-पुथल पर ध्यान केंद्रित करते हैं, सब कुछ नियंत्रण से बाहर लगता है। यह बहुत भयावह है। परन्तु ये जानते हुए कि हमारा परमेश्वर कौन है हम आशा से ऊपर और आगे की ओर देख सकते है। इसलिए, हम आत्मविश्वास से प्रार्थना करते हैं!

20. शिक्षा - बच्चे वही सीखते हैं जो उन्हें सिखाया जाता है। क्या आत्मसात किया जाता है वह रह जाता है और भविष्य में अपना आचरण स्थापित करता है। माता-पिता के रूप में, हमें यह निर्देश दिया गया है "लड़के को उसी मार्ग की शिक्षा दे जिसमें उसको चलना चाहिए, और वह बुढ़ापे में भी उससे न हटेगा।" (नीति. 22:6) प्रभु, हम माता-पिता को अपने बच्चों को आपके मार्ग सिखाने का आनंद प्रदान करें।

21. निराशा - "हे मेरे प्राण, तू क्यों गिरा जाता है? तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है? परमेश्वर पर भरोसा रख; क्योंकि वह मेरे मुख की चमक और मेरा परमेश्वर है, मैं फिर उसका धन्यवाद करूँगा।" (भजन 42:11)। जब आपका जीवन परमेश्वर में सुरक्षित है, तो आप आपके मन पर नियंत्रण, इच्छा और भावनाओं का भी समर्पण कर सकते हैं। पुरुषो, तुम्हें कभी निराश होने की जरूरत नहीं है।

22. अभिमान - ".... क्योंकि "परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है।" (1 पतरस 5:5)। अभिमान पाप का मुख्य स्रोत है। यह जिस ने तुम्हें अपने आदर और महिमा के लिये उत्पन्न किया है उससे अलगाव की घोषणा है। अपने प्रति ईमानदार रहें, संयम रखें अपने स्वयं के महत्व को देखें और परमेश्वर को समर्पित करें। वह दीनों को ऊपर उठाना पसंद करता है।

23. परिवर्तन - "इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल–चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।" (रोम. 12:2). हमारा दिमाग हमारे व्यवहार और भलाई को आकार देने का सबसे शक्तिशाली उपकरण है। परमेश्वर के वचन और उसकी आत्मा को अपनी सोच के पैटर्न को बदलने की अनुमति दें और आशीषित हों।

24. परिप्रेक्ष्य - "और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें..." (इब्रा. 12:2) हमारे अपने पापों और अपराधबोध तथा दूसरों के हमारे प्रति दुष्टता के कार्यों से शाश्वत आशा और मुक्ति केवल यीशु मसीह के माध्यम से ही है। सुसमाचार के शुभ समाचार पर मनन करें। जीवन में वास्तव में परमेश्वर का दृष्टिकोण पाने के लिए प्रार्थना करें जो मायने रखता है।

25. आशा - "परमेश्वर जो आशा का दाता है तुम्हें विश्वास करने में सब प्रकार के आनन्द और शान्ति से परिपूर्ण करे, कि पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से तुम्हारी आशा बढ़ती जाए।" (रोमियों 15:13)। आशा की कमी अवसाद, चिंता और मनोदैहिक बीमारियों को जन्म देती है। पुरुषो, जब आपकी आशा प्रभु में है, तो आप उसकी जीवनरेखा का उपयोग अथाह संसाधनों के लिए कर रहे हैं।

26. विश्वास - “अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।” (इब्रा. 11:1). विश्वास उन लोगों के लिए परमेश्वर की ओर से एक उपहार है जो उसकी बात सुनते हैं और उस पर विश्वास करते हैं। यह परमेश्वर की संतान के हृदय में पवित्र आत्मा की पुष्टि है। ऐसा व्यक्ति बनने के लिए प्रार्थना करें जो विश्वास के साथ अपनी इच्छा को पवित्र आत्मा के नेतृत्व में समर्पित करता है।

27. पीड़ा - "...केवल यही नहीं, वरन् हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यह जानकर कि क्लेश से धीरज,...उत्पन्न होता है।" (रोमियों 5:3) हमारे जीवन का उद्देश्य इससे यहाँ और अभी से कहीं अधिक है। परमेश्वर की योजना में कष्ट भी अंत नहीं है। वह हमें स्वयं हमारी आवश्यकताओं में अपने पास बुलाता है और हमें उस पर भरोसा करने के लिए प्रशिक्षित करता है कि हम सहन करने की सामर्थ के साथ विजयी हो।

28. दोस्ती - "मित्र सब समयों में प्रेम रखता है, और विपत्ति के दिन भाई बन जाता है।" (नीतिवचन 17:17). प्रत्येक मनुष्य को एक अच्छे मित्र की आवश्यकता होती है, ऐसा मित्र जो सच्चा और वफादार हो उसे बताएगा कि उसे क्या सुनना है। यह सोचना आश्चर्यजनक है कि यीशु ने अपने शिष्यों को अपना दोस्त बुलाया। इसमें कोई संदेह नहीं कि वह अब भी हमारा सबसे विश्वसनीय मित्र हैं। उसपे पूर्ण विश्वास रखें!

29. अंतिम शब्द – “मैं जानता हूँ कि तू सब कुछ कर सकता है, और तेरी युक्तियों में से कोई रुक नहीं सकती।” (अय्यूब 42:2)। आपका परमेश्वर कितना बड़ा है? अय्यूब ने पाया कि परमेश्वर किसी भी मानवीय समझ से परे, पवित्र, शाश्वत और सर्वशक्तिमान है। आप उस पर पूरी तरह से भरोसा कर सकते हैं। वह आप पर और आपके परिवार पर नजर रखेगा। इस दुनिया में आखिरी शब्द भी उन्हीं का है।

30. मसीह में - “.....उन पवित्र और मसीह यीशु में विश्वासी लोगों के नाम जो इफिसुस में हैं” (इफिसियों 1:1)। यदि आप मसीह में हैं, तो आप एक संत हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कहां रहते हैं। जो निर्णायक है वह यह है कि आप उसमें हैं जैसे शाखा बेल में है। (यूहन्ना 15:5) एक ऐसा व्यक्ति बनने के लिए प्रार्थना करें जो मसीह में गहराई से जुड़ा हुआ है और जो उसके लिए जीता है।